जयशंकर प्रसाद (साहित्यिक परिचय)

• नाम	जयशंकर प्रसाद
• जन्म	सन 1889 ईस्वी में
• जन्म स्थान	उत्तर प्रदेश राज्य के काशी में
• पिता का नाम	श्री देवी प्रसाद
• शैक्षणिक योग्यता	अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, हिंदी व संस्कृत का स्वाध्याय
• लेखन विधा	काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध
• मृत्यु	15 नवंबर, 1937 ईस्वी में

जीवन परिचय-

प्रसाद जी का जन्म काशी के ' सुंघनी साहू ' नाम से प्रसिद्ध वैश्य परिवार में 30 जनवरी , 1889 ई 0 को हुआ था । पिता जी का नाम देवी प्रसाद था| बचपन में ही इनके माता - पिता की मृत्य हो गयी|परिवार का सारा भार इनके बड़े भाई पर आ गया| सर्वप्रथम इनका नाम ' क्वींस कालेज में लिखाया गया , किन्तु वहाँ इनका मन नहीं लगा और घर पर ही योग्य शिक्षकों से अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन करने लगे, कुछ दिन बाद इनके बड़े भाई शम्भूनाथ जी भी चल बसे|

अब सारा भार प्रसाद जी के कंधो पर था | इन्होंने तीन शादियां कीं , किन्तु तीनों ही पत्नियों की असमय मृत्यु हो गयी । इसी बीच इनके छोटे भाई की मृत्यु हो गयी । इन सभी असामयिक मौतों से यह अन्दर - ही - अन्दर टूट गये । संघर्ष और चिन्ताओं ने स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुँचायीं । क्षय रोग से पीड़ित होने के कारण 15 नवम्बर , 1937 ई 0 को 47 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया ।

साहित्यिक परिचय :-

प्रसाद जी के काव्य में सौन्दर्य एवं प्रेम के साथ मानवतावादी दृष्टिकोण है। प्रसाद जी ने कुल रचनाओं से हिन्दी साहित्य में एक युग प्रसाद युग की सृष्टि की। रचना 'चित्राधार' में प्रकृति की रमणीयता एवं सौंदर्य के दर्शन होते हैं। प्रेमपथिक में मानव सौन्दर्य के प्रति जिज्ञासा का भाव व्यक्त हुआ है। 'आँसू' एक 'विरह काव्य है तथा कामायनी में प्रसाद की सिद्धावस्था एवं आध्यात्मिकता पूर्ण परिपाक हुआ है। अतः प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य में योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

कृतियाँ –

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। महान् कवि , सफल नाटककार , उपन्यासकार , कुशल कहानीकार और श्रेष्ठ निबन्धकार थे। इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं–

- **नाटक –**

चन्द्रगुप्त , स्कन्दगुप्त , अजातशत्रु , ध्रुवस्वामिनी , विशाख , राज्यश्री , कामना , जनमेजय का नागयज्ञ , करुणालय , एक चूंट , सज्जन एवं प्रायश्चित

- **कहानी संग्रह –**

  प्रतिध्वनि , छाया , इन्द्रजाल ,

  आकाशदीप , आंधी

- **काव्य –**

  कामायनी (महाकाव्य) , झरना ,

  लहर , आँसू , महाराणा का महत्त्व ,

  कानन- कुसुम आदि प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ हैं ।

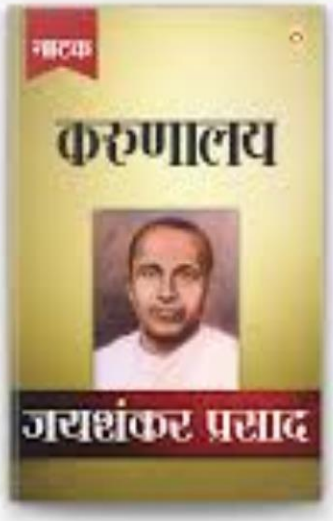

- **उपन्यास –**

  कंकाल , तितली ,

  इरावती (अपूर्ण)

- **निबन्ध – संग्रह –**

  ' काव्य कला ' और अन्य निबन्ध हैं ।

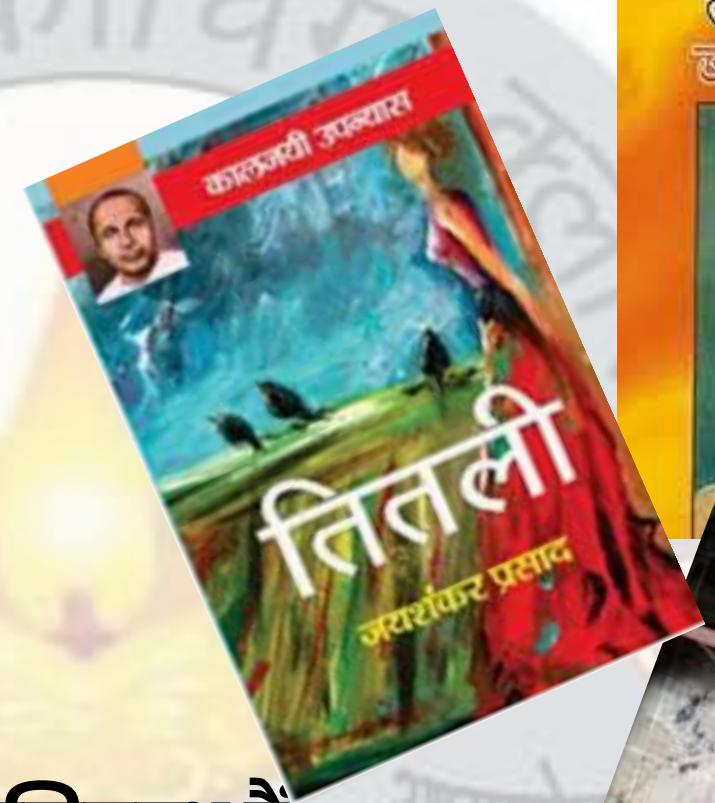

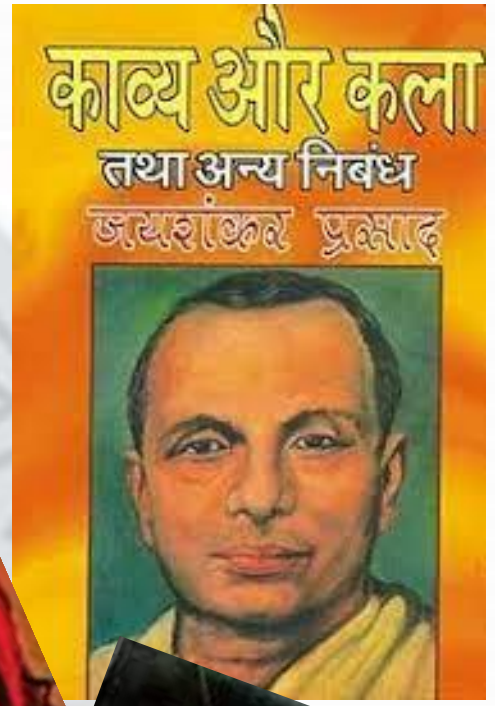

भाषा शैली –

प्रसादजी की भाषा शुद्ध , सरस , साहित्यिक एवं संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है ।

इनके काव्य में वर्णनात्मक भावात्मक आलंकारिक ए चित्रात्मक शैली के दर्शन होते हैं|

∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞